

## सांख्य-योग सामान्य परिचय

- ⇒ 'सांख्य-योग' दोनों अत्यंत प्राचीन दर्शन हैं। इनमें अन्तर केवल ईश्वर को मानने और न मानने को लेकर है।
- ⇒ सांख्य दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिल मुनि हैं।
- ⇒ योग दर्शन के प्रवर्तक महर्षि पतंजलि हैं।
- ⇒ योग दर्शन को पातंजलि दर्शन भी कहते हैं।
- ⇒ कपिल मुनि की कृतियाँ - 'सांख्य सूत्र' (सांख्य-प्रवचन-सूत्र),
- ⇒ ग्रन्थ सांख्य परम्परा द्वारा - ईश्वर कृष्ण → 'सांख्यकारिका' (भाव्यार ग्रंथ)
- ⇒ गौडपाद की - सांख्यकारिका भाष्य
- वाचस्पति मिश्रा - तर्क काँमुदी
- विलानमिश्र - सांख्य-प्रवचन-भाष्य
- हरिहराच्युत - सरल-सांख्य योग
- सोमानन्द - सांख्य तत्व विवेचन
- परमार्थमिश्र - हरिव्यसप्रति
- नारायण तीर्थ - चन्द्रिका
- भावगणेश - सांख्य तत्व व्याख्यान दीपन
- ईश्वरकृष्ण - धुम्कि दीपिका, अथमंगल
- ⇒ सांख्य दर्शन षट्क तन्त्र के नाम से भी जाना जाता है।
- ⇒ शंकराचार्य ने इसे 'प्रधान मल्ल' कहा है।
- ⇒ योग दर्शन के ग्रन्थ →
- पतंजलि - 'योगसूत्र'
- व्यास - भाष्य (योगसूत्र पर है)
- वाचस्पतिमिश्रा - तत्व-वैशारदी टीका
- विलानमिश्र - योग वार्त्तिक टीका, तत्व-वैशारदी
- शिवानन्द - पतंजलि रहस्य
- भोज - भोजवृत्ति
- भावगणेश - भागेशवृत्ति

अनन्त पण्डित - योग चन्द्रिका

यति - मार्ग प्रभा

सरस्वती - योग सुधाकर

⇒ योग दर्शन, सांख्य दर्शन का एक दर्शन माना जाता है।

⇒ सांख्य का अर्थ → इसके दो अर्थ हैं -

(i) - सांख्य सम्बन्धी अथवा आकलन (गणना) करने वाला। तत्वों की गणना करने के कारण ही भागवत में इसे तत्वगणक या तत्वसंख्यान् कहा गया है।

(ii) - सम्यक् ध्यान, अर्थात् सम्यक् ज्ञान या पूर्ण विचार भी कहा जाता है। यहाँ ज्ञान से तात्पर्य है - यह विवेक और आत्मा से अविद्या का विकास करके आत्मा को मुक्त करता है। यह अर्थ अधिक महत्वपूर्ण है।

⇒ डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार, यह सैद्धांतिक अनुसंधान के द्वारा अपने परिणामों तक पहुँचता है, इसलिए सांख्य कहलाता है।

⇒ योग शब्द का अर्थ → इसके अनेक अर्थ लिये जाते हैं -

(i) - जोड़ना या मिलाना (योग का सामान्य अर्थ से अर्थ)।

(ii) - "योग वस्तुतः वियोगः" योग दर्शन में योग से तात्पर्य अलग करने का काम लिया गया है। यह वियोग अज्ञान का प्रकृति से किया जाता है।

(iii) - योगसूत्रानुसार - "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" (चित्तवृत्ति का रोकना)।

(iv) - योगः समाधिः - योग को समाधि भी कहा जाता है, क्योंकि समाधि की अवस्था में सम्पूर्ण चित्तवृत्तियों का निरोध हो जाता है।

⇒ चित्तवृत्तियाँ हैं → चित्त से आगे प्रत्येक है - मन, बुद्धि और अहंकार।  
(पांच) प्रकार की हैं → प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्राः स्मृतयः। प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति।

⇒ चित्रशुभियाँ - 5 हैं → शिष्ट, मूढ, विक्षिप्त, रथकाग्र, निरुद्ध ।  
⇒ पंच-क्लेश → आविया, आघात, राग, द्वेष, अभिनिवेष ।  
⇒ पाँच योग → अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचरि, अपारिग्रह ।  
⇒ पाँच नियम → शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिवान  
⇒ अष्ट सिद्धियाँ → आदिमा, भदिमा, महिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य,  
वशित्व, ईशित्व, यथाकामावसायिता ।

⇒ पंच तत्त्व - पृथ्वी, आग्नि, अल, वायु, आकाश ।  
⇒ ईश्वर के चार गुण (योग) - क्लेश, कर्म, विपाक, आशय ।  
⇒ योग का लक्ष्य → 'आत्मा' की स्वरूप में प्रतिवठा अर्थात्  
आत्मा और परमात्मा का मिलन है ।

⇒ सांख्य दर्शन के 25 तत्व हैं - प्रकृति + पुरुष, महत् (बुद्धि),  
अहंकार (सात्विक, राजस, तामस), मन, पंच ज्ञानेन्द्रियाँ,  
पंच-कर्मेन्द्रियाँ, पंच-तन्मात्र, पंच-महाभूत ।

⇒ पंच-ज्ञानेन्द्रियाँ हैं → नेत्र, श्रावण, श्रवण, रसना, त्वचा ।  
↓                    ↓                    ↓                    ↓                    ↓  
रूप                    गंध                    शब्द                    स्वाद                    स्पर्श ज्ञान

⇒ पंच कर्मेन्द्रियाँ हैं → मुख, हाथ, पैर, मलद्वार, जननेन्द्रिय ।  
↓                    ↓                    ↓                    ↓                    ↓  
वाक्                    ग्रहण                    गमन                    मलकों                    जनन ।  
बाहर                    निकालना

⇒ पंच तन्मात्र → तन्मात्र (सूक्ष्म तत्व) - रूप तन्मात्र, शब्द तन्मात्र, गंध-  
तन्मात्र, रस तन्मात्र, स्पर्श तन्मात्र ।

⇒ पंच-महाभूत → आकाश, वायु, तेज, अल, पृथ्वी  
(स्थूल महाभूत)  
↓                    ↓                    ↓                    ↓                    ↓  
शब्द                    स्पर्श                    रूप                    रस                    गंध

ये पंच महाभूतों के गुण हैं ।  
⇒ प्रमाण - (3) - प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द - दोनों मानते हैं ।

⇒ सांख्य दर्शन में तीन प्रकार के दुःख बताये गये हैं -

(i) आध्यात्मिक दुःख ( व्याक्तिगत )

(ii) आधिभौतिक दुःख ( वस्तुगत )

(iii) आधिदैविक दुःख ( देवताओं से सम्बन्धित )

⇒ दुःख का कारण - अज्ञान ।

⇒ सांख्य दर्शन में दो प्रकार की मुक्ति बतायी गई है -

(i) जीवन मुक्ति (ii) - विदेह मुक्ति

⇒ सांख्य दर्शन में मोक्ष की प्राप्ति विवेक ज्ञान द्वारा होती है।

⇒ सांख्य दर्शन में तीन गुण बताये गये हैं - सत्व, रज, तम ।

⇒ सांख्य दर्शन - द्वैतवादी दर्शन है। क्योंकि यह दो तत्वों को मानता है - प्रकृति और पुरुष (आत्मा) ।

⇒ योग दर्शन में 26 तत्वों को स्वीकार किया गया है।

⇒ प्रकृति के नाम हैं - प्रधान, अविद्या, माया, अनुमा, जड, शक्ति, अव्यक्त, अविनाशी, आदि ।

⇒ सांख्य दर्शन के प्रमुख विचार ->

(i). सत्कार्यवाद -> कार्य उत्पत्ति के पूर्ण अपने कारण में दिया रहता है, जैसे तिल में तैल ।

(ii). द्वैतवाद -> दो मूल तत्व - प्रकृति, पुरुष ।

(iii) - त्रिविध दुःख

(iv) - पच्चीस तत्व

(v) - निरीश्वरवाद

(vi). विकासवाद -> 'दिए हुए का बाहर आना'। जो निहित है, उसका विकसित होना, इसलिये सांख्य में विकास सूक्ष्म से स्थूल की ओर होता है।

⇒ अष्टांग योग -> धर्म, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि ।